ISSN - 2347-7075
Impact Factor - 8.141

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE AND APPLIED RESEARCH

Double-Blind Peer Reviewed / Bi-Monthly / Referred / Open Access Research Journal

Vol. 13 No. 3
January – February - 2026

Young Researcher Association, Kolhapur (Maharashtra)

International Journal of Advance and Applied Research

(IJAAR)

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

ISSN – 2347-7075 Impact Factor– 8.141

January – February 2026

Volume-13 Issue- 3

Published by:
Young Researcher Association, Kolhapur, Maharashtra, India
Website: *https://ijaar.co.in*
Submit Your Research Paper on Email
Regular Issue: editor@ijaar.co.in
For Publication Call On - **8624946865**

Sr. No.	Name of Author	Title of Paper	Page No.
44	Vaishnavi Uttam Honrao	Impact Of Artificial Intelligence on Advertising Strategies in The Digital Era	246 to 249
45	डॉ. नेहा अनिल देसाई	कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी भाषा	250 to 253
46	प्रा. हुपरीकर सुशील अशोक	हिंदी साहित्य के संदर्भ: कृत्रिम बुद्धिमता का बहुआयामी दृष्टीकोन	254 to 258
47	प्रा. डॉ. मुल्ला इब्राहिम हमजा	कृत्रिम बुद्धिमतेचा शारीरिक शिक्षणव क्रीडा विकास क्षेत्रात वापरताना येणारी आव्हाने	259 to 263
48	Dr. Vijay K. Gheji Prof. Priti B. Desai	Socio-Psychological Study of Artificial Intelligence, Benefits, Concerns and Its Future Implication	264 to 267
49	Dr. Sarika Suresh Kedar	A Study on Adoption of CRM Techniques by Women Entrepreneurs in The Beauty Parlour Business in Pandharpur Tehsil	268 to 276
50	Mane Sandip S. Mr. Mulani K. I.	Assessment of Noise Pollution Levels During the Navratri Festival Using Artificial Intelligence: A Geographical Study of Hupari City	277 to 283
51	Dr. S. S. Lavekar	Impact of AI on Production and Distribution	284 to 287
52	डॉ. मांजर्डेकर सुशिलेंद्र दिनकर	१९९० नंतरच्या मराठी चित्रपटातील कृत्रिम बुद्धिमत्तेचे योगदान	288 to 291
53	प्रा. ए. टी. गावडे	कृत्रिम बुद्धीमत्तेचा सामाजिक संस्थांवर पडलेला प्रभाव: एक समाजशास्त्रीय अभ्यास	292 to 297
54	Dr. Ram Ningappa Naik Dr. Kedar Vijay Marulkar Dr. Anil Govind Suryawanshi	An Economic Analysis of Brick-Making Workers in Kolhapur City	298 to 303
55	Miss. Sudha Prakash Kamble	Artificial Intelligence And E- Commerce	304 to 306
56	Dr. Sandhya Jaysing Mane	The Role of AI in Political Science	307 to 311
57	Mr. Sanket Dattatray Gandhi	Impact of Artificial Intelligence on Share Market Analysis in India	312 to 314
58	Dr. Sabiha Asif Faras	Language Of Advertisement in The Age of Artificial Intelligence: A Paradigm Shift	315 to 318
59	Miss. Mrunmayee Milind Bendke	Impact Of Artificial Intelligence and Social Media on E-Commerce	319 to 321
60	Dr. Dhanashree Sham Deshpande	The Evolution of Artificial Intelligence in Education: Implications for Next Generation Learning	322 to 324
61	Dr. Namdeo Shamrao Adnaik	The Impact of Artificial Intelligence on The Global Economy: Opportunities, Challenges, And Future Prospects	325 to 330
62	Dr. Sarjerao Sadashiv Chile	Artificial Intelligence in Recruiting in Cooperative Banks: The Analysis of The Effort and Time-Saving	331 to 337
63	Miss. Patil Puja Sunil	A Study of Modern Agricultural Technologies in Enhancing Agricultural Productivity in Pandharpur Tehsil	338 to 345

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | Website: https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-3 | January – February 2026

Original Article

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी भाषा

डॉ. नेहा अनिल देसाई

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

चंद्राबाई – शांताप्पा शेंडूरे कॉलेज,हुपरी

Manuscript ID: IJAAR-130345
ISSN: 2347-7075
Impact Factor – 8.141

Volume - 13
Issue - 3
January – February 2026
Pp. 250 - 253

Submitted: 15 Jan.2026
Revised: 20 Jan. 2026
Accepted: 30 Jan. 2026
Published: 10 Feb. 2026

Corresponding Author:
डॉ. नेहा अनिल देसाई

Quick Response Code:

Website: https://ijaar.co.in/
d

DOI: 10.5281/zenodo.18538162

DOI Link:
https://doi.org/10.5281/zenodo.18538162

Creative Commons

OPEN ACCESS

सारांश:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से प्राचीन महत्त्वपूर्ण पांडुलिपि का साहित्य भी उचित रूप से सुरक्षित कर सकते है | ए आय के कारण लेखन की चुनौतियो को आसान बना सकते है | एआई ने भाषा के विकास को नई गति ,दिशा और विस्तार दिया है | हिंदी भाषा देश की सांस्कृतिक एकता और अखंडता का प्रयास करती है | हिंदी भाषा एआई की सहायता से तैयार की गई रचनाएं तकनीकि आधार पर तैयार होती है इसी कारण उसमें मानव जीवन की संवेदनशीलता का अभाव रह सकता है | रचनाकार अपने अनुभूत विचारो को लेकर साहित्य का निर्माण करता है | विभिन्न विधाओ में घटना एवं प्रसंग का चित्रण संवेदना के साथ किया जाता है | ए आई का साहित्यिक योगदान स्वीकार करते हुए यह भी स्वीकार करना होगा कि संवेदना का अभाव रह सकता है | लेकिन एआई के इस सामंजस्य से संवाद में प्रगति कर सकते है साथ ही वैश्विक संस्कृति और ज्ञान हासील करणे में सफल हो सकते है |

शब्दकुंज : स्कैन,सेंटर, डवलपमेंट, एडवांस कंप्यूटिंग, कंप्यूटर, ऑनलाईन, प्लॅटफॉर्म, ए आय आदि |

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:
डॉ. नेहा अनिल देसाई. (2026). कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी भाषा. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 250–253. https://doi.org/10.5281/zenodo.18538162

प्रस्तावना

साहित्य ने निरंतर गती से तकनिकी परिवर्तन के साथ विकास की ओर अग्रेसर होने का प्रयास किया है | वर्तमान समय में साहित्य भी AI से प्रभावित हुआ है | मशिनी बुद्धिमत्ता को कृत्रिम बुद्धिमत्ता या Artificial Intelligent कहा जाता है | कृत्रिम बुद्धिमत्ता का जनक जान मेकार्थ है | भाषा किसी भी व्यक्ति और समाज की अस्मिता होती है क्योंकी भाषा का संबध की संस्कृति और विरासत से गहरा है। भाषा संचार का साधन के साथ संस्कृति का वाहक भी है | हिंदी बोलने वालों को उनकी मूल भाषा में AI प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाने में

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | Website: https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-3 | January - February 2026

महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है । हिंदी बोलने वालों को AI-संचालित समाधानों तक पहुँच मिले जो उनकी भाषाई और सांस्कृतिक ज़रूरतों को दर्शाते है।

वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग माना जाता है । सूचना प्रौद्योगिकी के लिए संगणक का अविष्कार महत्त्वपूर्ण है। देश की संगणक क्रांति के बारे में प्रमोद भार्गव जी का कथन दृष्टव है कि "देश के पहले सुपर कंप्यूटर 'परम' के निर्माता एवं देश में सुपर कंप्यूटिंग की शुरुआत से जुड़े डॉ. विजय पांडुरंग भटकर ने एक चुनौती माना और इसके आविष्कार किया है। भटकर के नेतृत्व में 'सेंटर फॉर डवलपमेंट ऑफ एडवांस कंप्यूटिंग' (सी-डीएसी) द्वारा 1991 में विकसित कर लिया गया । इसे भटकर की सुपर कंप्यूटर एवं सी-डेक के आविष्कार को भारत की एक बड़ी राष्ट्रीय उपलब्धि माना गया । इसी संस्था ने देश का पहला सुपर कंप्यूटर परम-8000 विकसित किया । इसे 'परम शिवाय' भी कहा जाता है । इसे आईआईटी बनारस हिंदू वि.वि. में स्थापित किया गया है । इसके बाद परमसिद्धि-एआई नामक सुपर कंप्यूटर में कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग सफलतापूर्वक शुरू हुआ । यह भारत का पहला द्रुत गति का सुपर कंप्यूटर था । नवंबर-2023 के आँकड़ों के अनुसार विश्व के 500 सर्वाधिक क्षमता वाले सुपर कंप्यूटरों में भारत के चार कंप्यूटर सम्मिलत हैं । ये ऐरावत-पीएसएआई, परमसिद्धि, प्रत्यूष और मिहिर हैं ।"[1] संगणक के अविष्कार ने विद्यालयों-महाविद्यालयों में शिक्षण कार्य को अप्रत्याशित ढंग से बेहतर, विस्तृत और वैश्विक बनाया जा रहा है । हिंदी में शिक्षण सामग्री तैयार करना आसान और तेज हो गया । हिंदी लेखन को अधिक सरल एवं व्यापक बनाया है | इसके माध्यम से रचनाकार का समय और श्रम बचता है साथ ही साथ साहित्यिक रचना तयार करने में गतिशीलता प्राप्त होती है | जिसे हिंदी भाषा का प्रचार और प्रसार करने मे सहाय्यक सिद्ध होती है।

हिंदी लेखन के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता से संभावनाएँ बढ गई है | नवलेखक को साहित्य के रचनाकार बनने के लिए प्रतिभा संपन्नता एवं व्यापक अध्ययन की आवश्यकता और परिनिष्ठित भाषा का ज्ञान आवश्यक होता था | रचनाकार समय और मार्गदर्शन के अभाव में अपना लेखन कार्य नही कर पाते थे | ए आय की सहायता से साहित्य विधा की विषयवस्तु के साथ भाषाशैली एवं व्याकरणिक दृष्टिकोन में भी सहायता मिलती है | नवलेखक की रचनाओं का निर्माण के साथ प्रचार-प्रसार के लिए भी सहायता मिल रही है | कृत्रिम मेधा की मदद से अन्य भाषाओं की पुस्तकों को स्कैन करके अत्यंत कम समय में सीधे हिंदी में अनुवाद करना संभव हो गया है। खडीबोली हिंदी मे विभिन्न बोली भाषा मौजूद है | बोली भाषा का साहित्य है जैसे- राजस्थानी, मैथिली, मगही, ब्रज, अवधी, बुंदेली आदी भाषाओं में भी परंपरागत काव्य अनुठे रूप में मौजूद है | उसे ए आय की सहायता से अनुवादित करके इन भाषिक विशेषताओं की पहचान हो सकती है | इससे देश और भाषा की सांस्कृतिक विरासत को फिरसे नये स्तर पर लाने का सफल प्रयास किया जा सकता है | इस बारे में बालेंदू शर्मा जी का कथन है "हिंदी में पारंपरिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण आसान हो जाएगा । वाचिक ज्ञान को डिजिटल स्वरूपों में सहेजा जा सकेगा । हिंदी भाषी लोग वैश्विक संस्थानों में पढ़ सकेंगे, भाषाओं की सीमाओं से मुक्त रहते हुए कौशल प्राप्त कर सकेंगे और विश्व को अपनी सेवाएँ दे सकेंगे । हिंदी बोलने वाला व्यक्ति प्रौद्योगिकी के प्रयोग से अंग्रेजी, जापानी, चीनी, स्पैनिश, फ्रेन्च या अन्य भाषा-भाषी लोगों को कन्टेन्ट और सेवाएँ उपलब्ध करा सकेगा, बिना उन भाषाओं की जानकारी रखे ।"[2] इससे अपनी सांस्कृतिक विरासत को कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से संरक्षित प्रसारित किया जा सकता है |

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | Website: https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-3 | January – February 2026

ए आय की सहायता अनुसंधान में मिल रही है | अनुसंधान कर्ता प्राथमिक खोज के प्रथम स्रोत और दुय्यम स्रोत को अधिक गतिशीलता से विश्लेषित कर सकता है | ए आय की सहायता से विभिन्न साहित्यिक विमर्शो का वर्गीकरण विश्लेषण सुलभ होगा | तकनीक ने इसे विश्व के कोने-कोने तक पहुँचाया है तथा अब यह कृत्रिम मेधा से जुड़ कर विद्वानों और ज्ञान की भाषा बन रही हैं। इस दिशा में निरन्तर सजग रहने और अपने समय की उन्नत तकनीक के साथ जुड़े रहने की आवश्यकता है। तकनीक की मदद से भाषाई चुनौतियों तथा दूरियों का सिमटने के बारे में बालेंदू शर्मा जी का कथन है ,"जिस अविश्वसनीय और चमत्कारिक अंदाज में कृत्रिम बुद्धिमत्ता चीजों को बदल रही है, उसे देखते हुए अगले एक दो दशकों में हम भाषा-निरपेक्ष विश्व की ओर बढ़ सकते हैं। ऐसा विश्व जिसमें हिंदी जैसी भाषाएँ बोलने-लिखने वाला व्यक्ति अवसरों से वंचित्त न हो क्योंकि प्रौद्योगिकी एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद को इतना सटीक, सहज, सरल तथा सार्वत्रिक बना सकती है कि आप अंग्रेजी की सामग्री को हिंदी में पढ़ सकेंगे और हिन्दी की सामग्री को अंग्रेजी में। आप हिंदी में बोलेंगे और लोग आपको अंग्रेजी में सुन सकेंगे जब कि अंग्रेजी बोलने वाले व्यक्ति को आप हिंदी में सुन सकेंगे। ऐसा उदाहरण फिलहाल आई हिन्दी फिल्म 'डंकी' में देख सकते हैं, जहाँ अवैध रास्ते से लंदन पहुँचे भारतीय नवयुवकों को जब अंग्रेज जज के सामने पेश किया जाता है | तो कोर्ट की कार्यवाही के दौरान जो संवाद होता है उसमें दोनों ही पक्ष अपनी-अपनी भाषा का प्रयोग करते हैं। भारतीय नवयुवक हिंदी में अपनी बात कहते हैं, जज उसे अंग्रेजी में सुनता है और जज अंग्रेजी में बोलता है, और भारतीय नवयुवक उसे हिंदी में सुनते हैं। इस प्रकार भाषा उनके संवाद में कहीं बाधा नहीं बनती है। आश्चर्य नहीं कि भविष्य में यह तकनीक सभी के लिए स्वाभाविक रूप से उपलब्ध हो जाए।[3] स्पष्ट है कि , आज हिन्दी विश्व की प्रौद्यागिकी के माध्यम से प्रयोग करके भारत की साहित्यिक बड़ी भाषा बन रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से प्राचीन महत्त्वपूर्ण पांडुलिपि का साहित्य भी उचित रूप से सुरक्षित कर सकते है | ए आय के कारण लेखन की चुनौतियो को आसान बना सकते है |

लेखक के अनुभूत घटनाओं के आधार पर साहित्य का निर्माण होता है | उसे मानवीय संवेदनाओ के साथ अभिव्यक्त किया जाता है | मनुष्य की भावभावनाओं की अभिव्यक्ती साहित्य के माध्यम से की जाती है | तकनीक की सहायता से शब्दों को संयोजित करने में कुशलता प्राप्त कर सकती है लेकिन मानवीय भावनाओं की विविधता को पूरी तरह से समझना असंभव है |साहित्यिक गद्य रचना हो या पद्य रचना हो उसमे विषय वस्तु लेखन में जो भावनात्मक गहराई अनुभवजन्य भाव और सांस्कृतिक विरासत की देन होती है उसका अभाव हो सकता है | साहित्यिक मौलिकता का अभाव नजर आता है क्योंकि ए आय पुरी तरह मानवनिर्मित तकनीकी सहायता से कार्य करता है | मशीन निर्भर भाषा रचनाओ में मौलिक रचनात्मकता प्रतिभा से दूर हो जायेगी | भाषा की शुद्धता व्याकरण से भाषा समृद्धता का दृष्टिकोन निर्माण होता है | ए आई के लिए शब्द, शब्दकोश और व्याकरण संबंधी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाती है लेकिन इसमे त्रुटी निर्धारित है | इस बारे में डॉ.ज्योती यादव जी का कथन दृष्टव है कि " ए आई विशेष रूप से नॅचरल लॅग्वेज प्रोसेसिंग तकनिको का उपयोग कर साहित्यिक शैली मे लेखन कर सकता है | यह कविता और कहानी लेखन की प्रक्रिया को सरल बनाता है और नई शैली के साहित्यिक कार्य उत्पन्न कर सकता है | इसके साथ ही डिजिटल साहित्य का विकास भी हो रहा है | जहाँ AI द्वारा निर्मित साहित्य ऑनलाईन प्लॅटफॉर्मवर तेजी से लोकप्रिय हो

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | Website: https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-3 | January – February 2026

रहा है | हांलाकी ए आय जनित साहित्य मे मौलिकता और भावनात्मक गहराई की कमी हो सकती है | मानव लेखक की तुलना में ए आय की रचनाएँ केवल तार्किक और संरचनात्मक दृष्टिकोन से सटिक हो सकती है लेकिन उनमें वही संवेदनशीलता और गहराई नही होती जो एक मानव लेखक के विचारो और भावनांओ से उत्पन्न होती है | इसप्रकार ए आय के साहित्यिक योगदान का अपना स्थान है लेकिन इस पारंपारिक साहित्य के साथ जुडने की चुनौती बनी रहती है |" इस प्रकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता को एक सीमित रूप से भाषा के विकास के लिए प्रयोग कर सकते है |

निष्कर्ष:

एआई ने भाषा के विकास को नई गति ,दिशा और विस्तार दिया है | हिंदी भाषा देश की सांस्कृतिक एकता और अखंडता का प्रयास करती है | हिंदी भाषा एआई की सहायता से तैयार की गई रचनाएं तकनीकि आधार पर तैयार होती है इसी कारण उसमें मानव जीवन की संवेदनशीलता का अभाव रह सकता है | रचनाकार अपने अनुभूत विचारो को लेकर साहित्य का निर्माण करता है | विभिन्न विधाओ में घटना एवं प्रसंग का चित्रण संवेदना के साथ किया जाता है | ए आई का साहित्यिक योगदान स्वीकार करते हुए यह भी स्वीकार करना होगा कि संवेदना का अभाव रह सकता है | लेकिन एआई के इस सामंजस्य से संवाद में प्रगति कर सकते है साथ ही वैश्विक संस्कृति और ज्ञान हासील करणे में सफल हो सकते है |

संदर्भ:

1. सं. लक्ष्मी कुमार वाजपेयी, साहित्य अमृत (मासिक)(कृत्रिम बुद्धि और रोबोटिक्स की भविष्य की भाषा संस्कृति –प्रमोद भार्गव पृ.-49)
2. बालेंदू शर्मा दधीच, हिंदी विमर्श की मुख्यधारा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता,साहित्य परिक्रमा ,जुलाई -2023 पृ.21
3. बालेंदू शर्मा दधीच हिंदी विमर्श की मुख्यधारा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता,साहित्य परिक्रमा ,जुलाई -2023 पृ.20
4. Rawatsar P.G.College January - June 2025, ISSN:2393- 8048 (AI के प्रभाव स्वरूप भाषा और साहित्य में बदलाव - डॉ.ज्योती यादव पृ.220.)